मेरे लिए तेरापंथ शासन सिरमौरः आचार्यश्री महाश्रमण

आमेट में मनाया 148 वां मर्यादा महोत्सव, आचार्यश्री ने किया मर्यादा पत्र का वाचन, उमडा श्रद्धा का सैलाब, साधुवृंद के गीत संगान पर झूमा श्रावक समाज, मिलाए स्वर में स्वर, संघ को मजबूत करने की दी प्रेरणा

आमेटः 30 जनवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ शासन को स्वयं के लिए सिरमौर के रुप में परिभाषित करते हुए कहा कि यह आचार्यों से बडा शासन है। शासन के प्रति निष्ठा संघवंघ की प्रणाली है। हम इस शासन की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहने का प्रयास करें। हमारा धर्मशासन गरिमामय और सौहार्द से ओत–प्रोत है।

आचार्यश्री ने उक्त विचार आमेट नगर के मर्यादा समवसरण में सोमवार को मनाए गए 148 वें मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में देशभर के विभिन्न प्रांतों से समागत करीब बीस हजार श्रावक–श्राविकाओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने तेरापंथ की मर्यादाओं को आत्मा की संज्ञा देते हुए कहा कि आज ही के दिन प्रथम आचार्यश्री भिक्षु ने इसे लिखा था। इसमें एक आचार्य और एक उत्तराधिकारी की आज्ञा में चलने की बात कही गई है। हमारा धर्म संघ पिछले 251 वर्षों से इसी परपंरा का निर्वाह करता आ रहा है। मर्यादा पत्र में उल्लेखित तेरह मर्यादाओं की जानकारी देते हुए उन्होंने साधु–साध्वियों से आह्वान किया कि वे अन्य पांच मर्यादाओं के प्रति भी हमेशा जागरुकता बनाएं रखें। कषायों का मंदीकरण करते हुए निर्धारित आचार्य अथवा गुरु के प्रति जागरुकता और निष्ठा रखें। श्रावक समाज भी इसकी अनुपालना में आध्यात्म के संदर्भ में निष्ठा रखने का प्रयास करें। चातुर्मास और विहार आचार्य की आज्ञा में कर गुरु कथन का चरितार्थ करने का प्रयास करें। हमारे धर्म संघ में साधु–साध्वी बहुत विनीत है। एक निर्देश के लिए पूरी तरह से समर्पित हो जाते है। निर्देश की एक डोरी में बंधे रहते है। श्रावक समाज में भी समर्पण का भाव है। यह गौरव की बात है। शासन के प्रति निष्ठा का भाव बना रहे और छोटी–छोटी बातों को लेकर संघ से बाहर पांव रखने की बात नहीं हो। तुच्छ बातों को लेकर मन में अस्थिरता का भाव पैदा नहीं होना चाहिए। इसके लिए सदैव जागरुक रहने की आवश्यकता है। आचार्य भिक्षु की ओर से तेरापंथ धर्म संघ को प्रदत्त मर्यादाओं के प्रति

सजग रहने का आह्वान करते हुए कहा कि यह हमारी रक्षा करने वाली है। हम मर्यादाओं के प्रति सतर्क रहने का प्रयास करेंगे तो यह भी हमारी सुरक्षा करने में सेतू का काम करेगी। संघ के लिए जीने और मरने की आकांक्षा होनी चाहिए। उन्होंने गुरु द्वारा यदा कदा कही जाने वाली कठोर बातों, उलाहने को प्रसाद के रुप में विनयपूर्वक ग्रहण की बात कही। गुरु अपने शिष्य और समाज के किसी व्यक्ति को गल्ती करने पर उलाहना दे सकते है। जो शिष्य अपने गुरु की डांट को सह लेते है। गुस्से और आवेश में नहीं आता। वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। हम अहिंसा और मैत्री के मार्ग पर जाने का प्रयास करें। उन्होने साधु–साध्वियों से कहा कि वे इस वर्ष श्रावकों को प्रतिक्रमण सिखाने का प्रयास करें।

संस्थाओं में बनी रहे पारदर्शिता

आचार्यश्री ने तेरापंथ धर्म संघ में चल रही विभिन्न संस्थाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन संस्थाओं में पारदर्शिता बनी रहे। इसके लिए सभी को जागरुक रहने की जरुरत है। किसी भी संस्था में ऐसे पदाधिकारी का निर्वाचन अथवा मनोनयन न हो जाए जो मद्यपान करता हो और चारित्रिक दृष्टि से अयोग्य हो। संस्थाओं के पदाधिकारी इस बात भी ध्यान दें कि संस्था में अशुद्ध पैसे का आगमन न हो। बाहर के आकर्षण में रमने की बजाय भीतरी सुख को प्राप्त करने का प्रयास करें। अनुशासन की रूपरेखा नहीं बनेगी तो संगठन का ढांचा धराशायी हो सकता है। तेरापंथ में भी इस बात पर विशेष जोर दिया गया हैं कि अनुशासन और मर्यादाओं की पालना में कडे कदम उठाएं जाएं। यही बात परिवार पर भी लागू होती है। घर में इन बातों का पालन नहीं होगा तो प्रतिष्ठा धूमिल होने का खतरा बढ जाता है। इससे छुटकारा पाने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि मनुष्य निरन्तर धर्म की ओर अग्रसर रहे और व्यवहार में संयम बरते। संयम की साधना का पुट जीवन में होने से व्यक्ति सार्थकता को प्राप्त हो सकता है। उन्होंने जीवन विज्ञान, अणुव्रत और ज्ञानशालाओं को जीवन निर्वाह तथा संस्कार निर्माण के लिए उपयोगी उपक्रम बताया।

आमेट में फिर दोहराया इतिहास

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने हमारे माथे पर धर्म संघ रहेगा मुक्तक से श्रावक समाज को संबोधित करते हुए कहा कि इतिहास का सुरक्षित रखना बहुत दुर्लभतर है। हमारे धर्म संघ के इतिहास की सुरक्षा के प्रति हम सभी सावचेत रहे। इस दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। आज से 27 वर्ष पहले वर्ष 1985 में इसी मैदान और इसी मंच पर गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के चातुर्मास के दौरान मनाए गए अमृत महोत्सव में उन्होंने

गुरुदेव की वर्धापना की थी। आज आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में अमृत महोत्सव के साथ मर्यादा महोत्सव में शिरकत करने का सौभाग्य मिला। मनुष्य के मन में आज के परिवेश में नए के प्रति आकर्षण का भाव देखने को मिलता है। यह आकर्षण आध्यात्म और धर्म के प्रति भी बरकरार रहे। इसकी अपेक्षा है।

उन्होंने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण में अहिंसा, करुणा, प्रेम, सेवा और भाईचारे की जीती जागती तस्वीर देखने को मिलती है। इसी का परिणाम है कि श्रावक समाज इनके पास चुंबक की भांति खींचा चला आता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने हमेशा निश्चिंता के साथ जीवन का निर्वाह किया और धर्म संघ का नए शिखर तक ले जाने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने मौसम की मनुहार मानकर आज उतरा मधुमास शीर्षक की कविता के माध्यम से आचार्यश्री महाश्रमण के व्यक्तित्व और कृतित्व का बखान किया। उन्होंने मर्यादा महोत्सव को अतीत का सिंहावलोकन, वर्तमान का विहंगमालोकन और भविष्य का दुरवालोकन का पर्याय बताते हुए कहा कि पूरे विश्व की समस्याओं के निदान के लिए हमें नई संभावनाओं की खोज करनी है। हम संगठित होकर श्रावक समाज को युगीन बुराईयों से दूर रखने का प्रयास करें।

मुनि घासीराम को शासन स्तंभ का संबोधन

आचार्यश्री ने मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह के दौरान साधु–साध्वियों की सराहनीय सेवा के लिए उन्हें विशेष नाम के संबोधन से अलंकृत किया। उन्होंने मुनि घासीराम को शासन स्तम्भ, साध्वी नगीनाश्री, साध्वी मोहनकुमारी, साध्वी जयश्री, साध्वी भीखाजी, साध्वी सरोजकुमारी, साध्वी पानकुमारी, साध्वी फूलकुमारी, साध्वी संघमित्र, साध्वी राजकुमारी, साध्वी सोहनाजी, साध्वी रतनकुमारी, मुनि रमेशकुमार, मुनि सोहनलाल, मुनि मोहनलाल और मुनि वत्सराज को शासनश्री के संबोधन से सुशोभित किया।

मेवाडी भक्तों को प्रभु ने पुचकारा है

समारोह में साधुवृंद ने आचार्य और तेरापंथ धर्म संघ की मर्यादाओं का बखान गीत के माध्यम से करते हुए पांडाल में मौजूद हजारों श्रावकों को झूमने को विवश कर दिया। साधुओं ने अपने गीत में मीरा और महाराणा प्रताप की इस धरा का स्मरण करते हुए मेवाडी भक्तों ने पुचकारा है का उच्चारण किया। इस गीत की प्रस्तुति के दौरान स्थिति यह थी कि श्रावक समाज खडे होकर झूमने लगा और स्वर के साथ स्वर मिलाते हुए अपनी भक्ति का परिचय दिया। इस दौरान साध्वीवृंद की ओर से भी गीत का संगान किया गया। समारोह में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने भी विचार व्यक्त करते

हुए दो पुस्तकों को आचार्यश्री के चरणों में भेंट किया। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

खडे रहकर बने महोत्सव के साक्षी

शांतिदूत आचार्यश्री के सान्निध्य में मेवाड की पावन धरा पर आयोजि मर्यादा महोत्सव के वृहद स्तर के इस समारोह का साक्षी बनने के लिए देशभर के विभिन्न प्रांतों के श्रावकों का सैलाब उमड पडा। पांडाल खचाखच भरा था और कई लोग ढाई से तीन घंटे तक खडे रहकर आचार्यश्री के प्रेरणा पाथेय का श्रवण कर रहे थे। देशभर से समागत श्रावक–श्राविकाओं को पानी, चिकित्सा और अन्य सुविधाओं के लिए व्यवस्था समिति की ओर से पुख्ता प्रबंध किए गए थे। व्यवस्थाएं संयोजक धर्मचंद खाब्या, सह संयोजक सलील लोढा, ज्ञानेश्वर मेहता, दलीचंद कच्छारा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष प्रवीण ओस्तवाल, ललित कोठारी, संपत सामसुखा, तेरापंथी सभा आमेट के अध्यक्ष कन्हैयालाल कच्छारा, कोषाध्यक्ष मनसुख गेलडा, कंवरलाल रांका, आवास व्यवस्था समिति के संयोजक अशोक गेलडा, सतीश मेहता, महेन्द्र बोहरा, विनोद कच्छारा, गणपतलाल डांगी, बाबूलाल गांधी, महावीर हिरण, संतोष भण्डारी, दीपक कोठारी, संजय बोहरा, संदीप हिंगड, तेजप्रकाश कोठारी, इन्द्रमल गेलडा, शांतिलाल बाफना आदि पदाधिकारी संभाले हुए थे।

मेवाड स्तरीय युवती प्रशिक्षण कार्यशाला आज, तैयारियां पूर्ण

आमेटः 30 जनवरी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान और तेरापंथ महिला मंडल आमेट की ओर से शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में मंगलवार को तुलसी अमृत विद्यापीठ, जवाहर नगर में मेवाड स्तरीय युवती प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन होगा। इसकी सभी तैयारियां पूर्ण हो गई है। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गेलडा व मंत्री रेणु छाजेड ने बताया कि प्रातः नौ बजे होने वाली इस कार्यशाला में साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा का प्रेरणा पाथेय प्राप्त होगा। मुख्य अतिथि भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव किरण माहेश्वरी होगी। अध्यक्षता अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरडिया करेंगी। विशेष अतिथि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल महामंत्री श्रीमती पुष्पा बैद होगी। कार्यशाला की सफल क्रियान्विति को लेकर सोमवार को महिला मंडल पदाधिकारियों की बैठक हुई। इसमें कोषाध्यक्ष मीना गेलडा, मधु बोहरा, मधु चोरडिया, वनिता चौधरी, मीना भण्डारी, शीला कोठारी, सुरेखा ओस्तवाल और प्रियंका हिरण ने आवश्यक सुझाव दिए।